भारत सरकार

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय

भारी उद्योग विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1305

जिसका उत्तर बृहस्पतिवार, 04 दिसम्बर, 2014 को दिया जाना है

घाटे में चल रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का पुनरुद्धार

1305. श्री हुसैन दलवई:

क्या भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने एचएमटी घड़ी को बंद करने का निर्णय लिया है; यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) गत 10 वर्षों के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को हुए घाटे का ब्यौरा क्या है;

(ग) इन घाटे के कारकों का ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के पुनर्गठन संबंधी बोर्ड ने उनके पुनरुजीवित करने की सिफारिश की है; और

(ङ) यदि हां, तो इसे बंद करने का निर्णय क्यों लिया गया है?

उत्तर

भारी उद्योग और लोक उद्यम राज्य मंत्री

(श्री जी. एम. सिद्देश्वर)

(क): जी, नहीं।

(ख): दिनांक 31.03.2014 की स्थिति तक कंपनी ने ₹2252.22 करोड़ की संचयी घाटा दर्ज किया है। विगत 10 वर्षों के दौरान घाटे का वर्षवार ब्यौरा निम्नवत् है:

वर्ष	घाटा (₹ लाख में)
2004-05	(-)13453
2005-06	(-)7600
2006-07	(-)19581
2007-08	(-)14695
2008-09	(-)16405
2009-10	(-)16835
2010-11	(-)25374
2011-12	(-)22404
2012-13	(-)24247
2013-14	(-)23307

(ग): इन घाटों के लिए उत्तरदायी कारक निम्नवत हैं:

i. उच्च वेतन और मजदूरी लागत और उच्च ब्याज।

ii. मैकेनिकल घड़ियों के उत्पादन पर सतत ध्यान। मुख्यतः उनका बुनियादी ढांचा इसके लिए ही तैयार किया गया था, जबकि बाजार मैकेनिकल घड़ियों से क्वार्ट्ज घड़ियों की तरफ मुड़ चुका है।

iii. कम मूल्य वर्धन।

iv. ऋणदाताओं को भुगतान करने में असमर्थता के फलस्वरूप पूर्ति श्रृंखला में विघटन।

v. कम उत्पादन के परिणामस्वरूप कारोबार में घड़ियों की आपूर्ति नहीं हुई जिसकी वजह से रिडिस्ट्रिब्यूशन स्टॉकिस्ट्स, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं, जिन्होंने एचएमटी वाचिज लिमिटेड को भुगतान करने में चूक की, के प्रचालनों की व्यवहार्यता नहीं रही।

vi. उत्पादन संवर्धन कार्यकलाप न किया जाना।

vii. प्रौद्योगिकी और बनावट (स्टाइल) संशोधन न किया जाना।

(घ): जी, हां। लोक उद्यम पुनर्गठन बोर्ड ने वर्ष 2006 में एचएमटी वाचिज लिमिटेड के पुनरुद्धार की सिफारिश की थी।

(ङ): लागू नहीं।

******